16 दिसम्बर 1999

साहित्य अकादेमी

इंडिया इंटरनेशनल सेंटर

# लेखक से भेंट

## श्रीलाल शुक्ल

"गाँव का एक दृश्य था, गाँव में हरियाली थी, पवन पुरवाई थी, ऊदे-ऊदे बादल थे, हिंडोले थे, खिलखिलाती युवतियाँ थीं, बाँके रंगीले, पर निहायत शरीफ़ छैले थे, ग्रामगीत थे, घुँघरू थे और कंगनों की खनक थी, देश और मल्हार के आलाप थे। गाँव था, पर वहाँ ग़रीबी नहीं थी, अभाव नहीं थे, अत्याचार और शोषण नहीं था, गंदगी, बीमारी, कुरूपता, हताशा, उदासी कुछ भी नहीं थी। इस इकतर्फा तस्वीर ने मुझे उकसाया और मैंने बरसात में गाँव की दुर्दशा पर 'स्वर्गग्राम और वर्षा' नामक एक व्यंग्य-कथा लिख डाली। उसी से मैं लेखक बन गया।" यह कथन है *रागदरबारी* और *विश्रामपुर का संत* जैसे उपन्यासों के यशस्वी लेखक श्रीलाल शुक्ल का कि कैसे 1954 में आकाशवाणी पर प्रसारित वर्षामंगल के एक कार्यक्रम के प्रतिक्रियास्वरूप उनकी रचना-यात्रा की शुरुआत हुई।

अपनी व्यंग्य शैली के लिए प्रख्यात शुक्लजी की तमाम कृतियों से गुज़रने पर उनके लेखन में व्याप्त विविधता का आश्चर्यजनक परिचय मिलता है। उपन्यास, कहानी, निबंध, संस्मरण, यात्रावृत्त, आत्मवृत्त, समीक्षा आदि विधाओं में निरंतर रचनाशील शुक्लजी ने प्रारंभ में कुछ कविताएँ भी लिखी थीं। लेकिन सर्वत्र व्याप्त व्यंग्य भाव इनकी रचनाओं के स्थायी भाव की भाँति अपनी प्रतीति कराता रहता है।

श्रीलाल शुक्ल का पहला उपन्यास *सूनी घाटी का सूरज* एक चरित्रप्रधान उपन्यास है, जिसमें रामदास के चरित्र के माध्यम से तत्कालीन समाज-व्यवस्था की दोहरी स्थितियों को व्यक्त किया गया है, जहाँ स्वतंत्रता-पूर्व के ग्रामीण परिवेश का सूक्ष्म और प्रामाणिक चित्रण हुआ है, जबकि *अज्ञातवास* जहाँ स्वतंत्रता के बाद की बदलती स्थितियों और शोषण के हथकंडों में आ रहे परिवर्तनों का संकेत देता है, वहीं उत्तर प्रदेश के एक अंचल विशेष का मोहक चित्र प्रस्तुत करता है।

उसी दौरान प्रकाशित व्यंग्य निबंधों का उनका पहला संकलन *अंगद का पाँव* उनके गहरे सामाजिक बोध, तज्जन्य बेचैनी और सर्जनात्मक उत्तरदायित्व को रेखांकित करता है, इसके निबंधों में अनेक संस्थानों की रूढ़ प्रवृत्तियों और भ्रष्ट कर्मकांडों का उद्घाटन है। यथार्थ की निर्मम समझ और व्यंग्य के सर्जनात्मक प्रयोग की उनकी विशिष्ट दृष्टि ने जब *रागदरबारी* जैसे अप्रतिम उपन्यास को जन्म दिया तो हिन्दी साहित्य जगत में उनकी पर्याप्त पहचान बनी।

*रागदरबारी* को आद्योपांत व्यंग्य विधा में लिखा गया हिन्दी का पहला बड़ा उपन्यास कहा गया। प्रकाशन के दूसरे वर्ष ही इसे साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस उपन्यास में भारतीय ग्राम्य जीवन के उपन्यासों की परंपरा में *गोदान* और *मैला आंचल* में वर्णित समयावधि के बाद के ग्रामीण यथार्थ का सजीव चित्रण है। यह आकस्मिक नहीं कि *भारतीय ग्राम* जैसी महत्त्वपूर्ण पुस्तक के लेखक प्रख्यात

समाजशास्त्री डॉ. श्यामाचरण दुबे *रागदरबारी* का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि "विराट समाजशास्त्रीय कल्पना वाले बीस विद्वान ग्रामीण यथार्थ के बारे में जो नहीं कह सकते, वह इस उपन्यास में श्रीलाल शुक्ल ने कह दिया है।"

शुक्ल जी की व्यंग्य दृष्टि ही उन्हें वह शैली-शिल्प प्रदान करती है, जो उन्हें अन्य कथाकारों से अलग करती है। यह ध्यातव्य है कि नकारात्मक चरित्रों के माध्यम से सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति के जैसे प्रयास शुक्ल जी की रचनाओं में नज़र आते हैं, वे अन्यत्र दुर्लभ हैं। *रागदरबारी* में उपस्थित समाज-व्यवस्था भी ऐसे ही नकारात्मक चरित्रों द्वारा संचालित है। उपन्यास में चित्रित गाँव 'शिवपालगंज' आज़ादी के बाद के समस्त भारतीय ग्राम-समाजों के प्रतिनिधि के रूप में तत्कालीन व्यवस्था का निर्मम सच प्रस्तुत करने में सफल है।

एक बिलकुल भिन्न चुनौती निभाते हुए शुक्ल जी ने जो उपन्यास लिखा है, वह है – *आदमी का ज़हर*। आम जासूसी उपन्यासों से इतर इस उपन्यास की रचना से उन्होंने यह अहसास कराया कि कोई अपराध-कथा भी भयानक यथार्थ का उद्घाटन कर सकती है और एक औसत सनसनीखेज रहस्य कथा की तरह साँस रोककर चरम उत्सुकता के साथ पढ़ी जा सकती है। दूसरी तरफ़ *सीमाएँ टूटती हैं* में प्रेम और आपराधिक प्रवृत्तियों का एक ताना-बाना है, जिसे लेखक ने बुना भी है और खोला भी। जबकि *मकान* की कथा में एक मध्यवर्गीय नौकरीपेशा आदमी के लिए मकान का मिलना एक बहुत बड़ी समस्या बन गयी है, इस तलाश में जब लेखक उसके साथ हो लेता है तो विचित्र, हास्यास्पद और कठोर अनुभवों का जो संसार सामने आता है, वही इस उपन्यास में अद्भुत ढंग से चित्रित है, श्री शुक्ल के अनुसार, "मकान तक आते-आते मैंने व्यंग्य को आधुनिक जीवन और आधुनिक लेखन के एक अभिन्न अस्त्र (शस्त्र नहीं?) और एक अनिवार्य शर्त के रूप में पाया है।"

वास्तव में व्यंग्य का जैसा सर्जनात्मक प्रयोग कविता के क्षेत्र में नागार्जुन ने किया, कथा-लेखन के क्षेत्र में वही प्रयोग श्रीलाल शुक्ल की रचनाओं में नज़र आता है। उनके प्रमुख व्यंग्य-संग्रह हैं – *मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, उमराव नगर में कुछ दिन, कुछ ज़मीन पर कुछ हवा में, आओ बैठ लें कुछ देर* और *अगली शताब्दी का शहर*। डॉ. परमानंद श्रीवास्तव के अनुसार, "श्रीलाल शुक्ल के व्यंग्य निबंधों का गद्य और कथा-गद्य एक जैसा है। इस अर्थ में वे भारतेंदु की परंपरा के सच्चे उत्तराधिकारी हैं, जिनकी व्यंग्य विनोद वृत्ति ने कथा को निबंध के निकट और निबंध को कथा के निकट ला दिया।"

श्रीलाल शुक्ल की अन्य बहुतेरी रचनाओं में, जो कहानी, निबंध, यात्रावृत्त, संस्मरण आदि के रूप में हैं, जहाँ एक ओर हास्य का सहारा लेते हुए समकालीन समाज की विसंगतियों पर कटाक्ष हैं, वहीं दूसरी और भ्रष्ट व्यवस्था की कड़वी सच्चाई को व्यंग्य-कटार से उभारा गया है। इस दृष्टि से 'एक बेचैन रिश्ता : सत्ता और संस्कृति', 'कुत्ते और कुत्ते', 'मियां की जूती मियां के सर', 'राजनीतिज्ञों की पंचायत', 'उमराव नगर में कुछ दिन' उनकी कुछ उल्लेखनीय व्यंग्य-रचनाएँ हैं।

दूसरी ओर श्रीलाल शुक्ल के कहानी-संग्रह *यह घर मेरा नहीं* और *सुरक्षा तथा अन्य* कहानियाँ को पढ़ते हुए मध्य वर्ग की एक ऐसी दुनिया सामने आती है, जो अपनी हालत के लिए अपने को अभिशप्त मानता है और 'अभिजात' के उन सपनों

में जी रहा है, कहीं-कहीं जिनके टूटने का अवसाद भी है।

*पहला पड़ाव* की कथा विलासपुरी मज़दूरों को केन्द्र में रखकर लिखी गयी है, जहाँ उनसे जुड़े विभिन्नवर्गीय सामाजिक चरित्रों की पर्याप्त पड़ताल हुई है। इस क्रम में, नौकरशाही, निर्माण निगम, इंजीनियर और ठेकेदारों से मिलकर बननेवाले शोषण तंत्र में लाभ, लोभ, अपहरण, लूट-खसोट, भ्रष्टाचार और अपराधीकरण की जो नयी संस्कृति देश में पनप रही है, उसका विद्रूप सामने आया है। सचमुच ईंट और पत्थरों के विराट प्रसार में आदमी के ईंट और पत्थर में बदलते जाने की त्रासद स्थिति बड़ी भयावह है।

श्रीलाल शुक्ल का बहुचर्चित नया उपन्यास *विश्रामपुर का संत* अपने समय की राजनीति पर एक तीखी और कठोर टिप्पणी के रूप में सामने आता है। उपन्यास की कथा-वस्तु भ्रष्ट राजनीति के अंग रहे कुंवर जयंती प्रसाद सिंह की मनःस्थितियों के सहारे चलती हुई कई सामाजिक राजनीतिक आंदोलनों, जिनमें से एक भूदान यज्ञ भी है, की निर्मम पड़ताल करती है और स्त्री-पुरुष संबंधों से लेकर स्वयं जीवन की विभिन्न स्थितियों का अद्‌भुत 'पाठ' प्रस्तुत करती है। कथा नायक के चारित्रिक अंतर्विरोधों के उद्‌घाटन के क्रम में लेखक ने भारतीय राजनीति की त्रासदी को भी बखूबी उभारा है।

कुल मिलाकर *सूनी घाटी का सूरज* से लेकर *विश्रामपुर का संत* तक के लेखकीय सफ़र में श्रीलाल शुक्ल ने रचनात्मकता के स्तर पर निरंतर नए आयाम जोड़े हैं। यह भी अनायास नहीं है कि *विश्रामपुर का संत* नामक श्रेष्ठ उपन्यास के तुरंत बाद ही उनका बाल उपन्यास *बब्बरसिंह और उसके साथी* प्रकाश में आता है।

*बब्बरसिंह और उसके साथी* के प्रकाशन के साथ ही श्रीलाल शुक्ल उन साहित्यकारों की श्रेणी में आ खड़े होते हैं, जिन्होंने साहित्य-रचना के क्षेत्र में बाल पाठकों के लिए भी साहित्य रचकर अपने रचनात्मक उत्तरदायित्व का निर्वाह किया है।

तीन पीढ़ियाँ : पत्नी, पुत्री और नाती के साथ

श्रीलाल शुक्ल स्वयं गहरे साहित्य अध्येता हैं। उनकी लिखी समीक्षा/आलोचना का अपना ही एक रंग हैं। *अज्ञेय : कुछ राग और रंग* तथा साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित भगवतीचरण वर्मा और अमृतलाल नागर पर लिखे इनके विनिबंध इनकी समीक्षा-दृष्टि के उदाहरण हैं।

श्रीलाल जी की कृतियों का अनुवाद विभिन्न भाषाओं में हुआ है। *रागदरबारी* का अंग्रेज़ी सहित प्रायः सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। *पहला पड़ाव* का अंग्रेज़ी अनुवाद और *मकान* का बाङ्ला अनुवाद भी प्रकाशित हुए हैं। यह भी उल्लेखनीय है कि श्रीलाल शुक्ल के साहित्य पर शोध-अध्ययन के लिए लगभग पच्चीस शोधार्थियों को विभिन्न विश्वविद्यालयों द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गयी है। *रागदरबारी* पर कृष्ण राघव द्वारा निर्देशित दूरदर्शन धारावाहिक भी पर्याप्त चर्चित रहा।

## प्रकाशित पुस्तकें

### उपन्यास

सूनी घाटी का सूरज : 1957

अज्ञातवास : 1962

राग दरबारी : 1968

आदमी का ज़हर : 1972

सीमाएँ टूटती हैं : 1973

मकान : 1976

पहला पड़ाव : 1987

विश्रामपुर का संत : 1998

बब्बर सिंह और उसके साथी : 1999

### कहानी

यह घर मेरा नहीं : 1979

सुरक्षा तथा अन्य कहानियाँ: 1991

### व्यंग्य

अंगद का पाँव : 1958

यहाँ से वहाँ : 1970

मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ : 1979

उमरावनगर में कुछ दिन : 1986

कुछ ज़मीन पर कुछ हवा में : 1990

आओ बैठ लें कुछ देर : 1995

अगली शताब्दी का शहर : 1996

### आलोचना

अज्ञेय : कुछ राग और कुछ रंग : 1999

### विनिबंध

भगवतीचरण वर्मा : 1989

अमृतलाल नागर : 1994

### अनुवाद

*रागदरबारी* का अंग्रेज़ी सहित सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में, *पहला पड़ाव* का अंग्रेजी में और *मकान* का बाङ्ला में

## जीवन-विवरण

1925 लखनऊ ज़िले के अतरौली गाँव में जन्म

1947 इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक

1949 राज्य सिविल सेवा में प्रविष्ट

1957 पहली पुस्तक *सूनी घाटी का सूरज* (उपन्यास) प्रकाशित

1958 *अंगद का पाँव* (व्यंग्य-संग्रह) प्रकाशित

1970 *रागदरबारी* (उपन्यास) पर 1969 का साहित्य अकादेमी पुरस्कार

1978 *मकान* (उपन्यास) पर मध्य प्रदेश हिन्दी साहित्य परिषद् का पुरस्कार

1979-80 'भारतेन्दु नाट्य अकादेमी', उ.प्र., लखनऊ के निदेशक

1981 अंतर्राष्ट्रीय लेखन सम्मेलन, बेलग्रेड में भारतीय लेखक प्रतिनिधि

1982-86 साहित्य अकादेमी की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य

1983 भारतीय प्रशासनिक सेवा से सेवानिवृत्त

1987-90 भारत सरकार द्वारा एमरेटस फेलोशिप प्राप्त

1988 उ.प्र. हिन्दी संस्थान का साहित्य भूषण सम्मान

1991 कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय का गोयल साहित्य पुरस्कार

1992-93 पेंगुइन बुक्स (भारत) द्वारा *राग दरबारी* और *पहला पड़ाव* के अंग्रेज़ी अनुवाद प्रकाशित

1994 उ.प्र. हिन्दी संस्थान का लोहिया सम्मान

1996 मध्य प्रदेश शासन का शरद जोशी सम्मान

1997 मध्य प्रदेश शासन का मैथिलीशरण गुप्त सम्मान

1998 *विश्रामपुर का संत* (उपन्यास) का प्रकाशन

1999 *बब्बरसिंह और उसके साथी* (बाल उपन्यास) का प्रकाशन

कुछ विशिष्ट लेखकों के साथ
बायें से दायें : कमलाकांत त्रिपाठी, दूधनाथ सिंह, नामवर सिंह, श्रीलाल शुक्ल, मुद्राराक्षस